ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 290-292

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

ग्रामीण समाज की अवासीय दशाऐं

स्मिता यादव
शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग, शिब्ली नेशनल कालेज, आजमगढ़ (उ. प्र.), भारत

Received- 19.07.2020, Revised- 21.07.2020, Accepted - 23.07.2020 E-mail: hemantkumarasthana1955@gmail.com

सारांश : *मकान का तात्पर्य व्यक्ति या उनके परिवार के आवास की एक इकाई है जिसका कुछ भाग गैर आवासीय कार्यों के लिए भी प्रयुक्त होता है (यू०एन०ओ० : 1976 : 219)। संयुक्त राष्ट्रसंघ की विभिन्न संस्थाओं और अभिकरणों ने मकान को भौतिक पर्यावरण और सांस्कृति आवरण माना है। इस अभिकरण के अनुसार मकान उन सभी प्रकार की सहायक सेवाओं और सामुदायिक सुविधाओं को समन्वित करता है जो मानव के कल्याण के लिए आवश्यक है। मकान की अवधारण के अन्तर्गत सामुदायिक सुविधाएं और सेवाओं का समन्वय है (यू०एन०ओ० : 1976)। निफेन के अनुसार मनुष्य की आवासीय दशा उसके सांस्कृतिक विरासत, प्रकार्यात्मक आवश्यकताओं और गैर सांस्कृतिक पर्यावरण के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों को भी प्रतिबिम्बित करती है। (निफेन : 1963 : 549) सामान्य रूप से आवासीय दशाओं के अन्तर्गत उन भौतिक संरचनात्मक दशाओं को लिया जा सकता है जो व्यक्ति को सुरक्षा, सुख–सुविधा तथा शान्ति प्रदान करती है।*

कुंजीभूत शब्द– अभिकरणों, पर्यावरण, अभिकरण, अनुसार, सहायक, सामुदायिक, सुविधाऐं, समन्वित, आवश्यक।

सील के शब्दों में, आवासीय व्यवस्थापन वे भौतिक–संरचनात्मक दशाएं होती हैं जिन्हें व्यक्ति अपनी सुरक्षा के लिए निर्मित करता है और उसमें वे सभी सेवाएं, उपकरण और साधन उपलब्ध होते हैं जो व्यक्ति तथा उसके परिवार के शारीरिक और मानसिक कुशलता के लिए आवश्यक और अपेक्षित होती है (नील : 1971 : 210)। समाज में आवासों के प्रतिमान समाज विशेष की भौतिक तथा सामाजिक दशाओं पर निर्भर करते हैं। आवासीय दशाओं में होने वाला परिवर्तन मानव और उसके पर्यावरण के अभियोजन में होने वाले परिवर्तन को प्रतिबिम्ब करता है (आर०एल० सिंह तथा अन्य : 1973 : 185)। होवेल के अनुसार आवासों के प्रकार एवम् उनकी संरचना में भिन्नताएं स्थानीय जलवायु, उपलब्ध सामग्री, जीविकोपार्जन सम्बन्धी आर्थिक दशाओं, सामाजिक संगठन की प्रकृति तथा बाहरी दुश्मनों के आक्रमण सम्बन्धी भय की प्रकृति पर निर्भर करती हैं (हावेल : 1958 215)।

आवासीय दशाएं व्यक्ति और समूहों में आत्मसन्तुष्टियों और अर्न्तसम्बन्धों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। हलन तथा मदान ने निवास सम्बन्धी दशाओं को व्यक्ति के सामाजिक जीवन तथा उसके स्वास्थ्य एवं बिमारी में एक महत्त्वपूर्ण कारक स्वीकार किया है (होले : 1967 : 521 : 1979 : 112)। शौर का विचार है कि आवासीय दशाओं की अनुपयुक्तता व्यक्ति में निराशावाद, शिथिलता, असन्तुष्टि, एकाकीपना की अपेक्षा समूह में आनन्द की प्राप्ति, लोगों का संगठनों के प्रति द्वेष–भाव, उपयुक्त साधनों के अभाव में यौन–उत्तेजना, पारिवारिक व्यवस्था तथा बच्चों के पालन–पोषण में असुविधा तथा परिवार में तादात्मीकरण की अपेक्षा पड़ोस या पड़ोस के बाहर सामाजिक सम्बन्धों की स्थापना मूलक अन्यान्य समस्याएं उत्पन्न करती है (शोर : 1964 20–21)। एन्जोरिया तथा नानावती ने यह स्वीकार किया है कि आवासीय दशाओं का समूहों की एकीकरण सम्बन्धी क्रियाओं से घनिष्ठ प्रकार्यात्मक सम्बन्ध है (एन्जोरिया तथा नानावती : 1970 : 207)। टाउनलेंड का मत है कि निम्न आवासीय दशाएं व्यक्ति में निम्न आत्ममूल्यांकन, निम्न महात्वाकांक्षाएं एवं निम्न उपलब्धि उन्मुख्ता उत्पन्न करती हैं (टाउनसेंड : 1970 : 144)।

आवासीय दशाओं का प्रभाव परिवार में बच्चों के पालन–पोषण, उन पर पारिवारिक नियन्त्रण, स्त्री तथा पुरुष सदस्यों के यौन–सम्बन्धों की गोपनीयता तथा परिवार के सदस्यों के बीच अर्न्तसम्बन्धों आदि पर विशेष रूप से प्रभाव पड़ता है। इस सन्दर्भ में लेविस (1961), डेविस (1946), शोर (1964), कार्टर (1963) और ब्लूड (1952) तथा हसन (1967) के अध्ययन महत्त्वपूर्ण हैं। लेविस के अनुसार जिन घरों में बच्चों के रहने के लिए तथा खेल–कूद के लिए उपयुक्त स्थान नहीं होता प्रायः उन परिवारों के बच्चे बाहर ही जीवन व्यतीत करते हैं यहां तक कि छः वर्ष की आयु में ही इनके ऊपर से परिवार का नियन्त्रण समाप्त हो जाता है (लेविस एच० : 1961 : जून 8)। डेविस ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन घरों में आवास के लिए उपयुक्त

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

स्थान नहीं होता उन घरों में लोग अपनी नींद पूरी नहीं कर पाते हैं जो उनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालती है (डेविस : 1946)। शोर का कहना है कि निम्न आवासीय वाले तंग घरों में जहाँ बच्चे माता–पिता के साथ सोते हैं बच्चों में यौन–उत्प्रेरणा उत्पन्न होती है (शोर : 1964 : 115)। कार्टर और ब्लूड के अनुसार जिन तंग घरों में बच्चे अपने माता–पिता के साथ सोते हैं उनकी माता–पिता ने द्वेष की भावना तथा तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न होती है (कार्टर : 1963 तथा ब्लूड : 1952)। होले के अध्ययन से परिलक्षित होता है कि आवासीय दशाएं पारिवारिक जीवन, शिक्षा, बच्चों के भविष्य निर्माण प्रगति तथा सामान्य स्वास्थ्य को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं (हलन : 1967 : 52)। शोर के विचार से आवासीय दशाओं की अनुपयुक्तता प्रायः परिवार में पाये जाने वाले प्राकृतिक सम्बन्धों की स्थापना में बाधा उत्पन्न करती हैं तथा व्यक्ति परिवार से बाहर पड़ोस या अन्य संगठनों के साथ आवांछनीय सम्बन्धों की स्थापना करने लगता है और यह स्थिति प्रायः व्यक्ति की भौतिक तथा सामाजिक गतिशीलता में बाधक होती है और इस प्रकार यह निर्धनता बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण कारक का कार्य करती है (शौर : 1964 : 115–116)।

व्यक्ति के जीवन में आवासीय दशाओं के महत्व को देसाई तथा होल के विचार से भली प्रकार समझा जा सकता है। होल के अनुसार आवासीय दशाएं व्यक्ति की समाज में पद और प्रतिष्ठा, रहन–सहन तथा विचार एवं चिन्तन के स्तर को परिलक्षित करती है। यही नहीं, यह व्यक्ति की सुख–शान्ति तथा उसकी जीवन शैली को भी निर्धारित करती हैं (होले, जुलाई 1959 : 161–173)। देसााई के अनुसार मकान–वे स्तम्भ हैं जिस पर परिवार के सदस्यों के आन्तरिक सम्बन्धों और उसकी इकाईयों के बाहरी दुनियां से सम्बन्धों का जटिल नाटक कार्यन्वित होता है। मकान, जो कि उसमें रहने वाले परिवार का घर बनता है उन वृद्ध सदस्यों के लिए जो समाज में अपनी भूमिका अदा करने के बाद आराममय जीवन व्यतीत करने की तथा शेष जीवन में अपने प्रति कोमल व्यवहार की आकांक्षा रखते हैं, महत्त्वपूर्ण घटना स्थल है। आवास उन कार्यरत सदस्यों के लिए जो कार्य से खाली समय घर में व्यतीत करते हैं अपनी व्यावसायिक भूमिका को दक्षतापूर्ण निभाने के लिए शान्ति मुक्ति प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह वह स्थान है जहाँ पर कामसुत सुदृढ़ अन्तरंग, गरिमामय तथा प्राथमिक भावनामय सम्बन्धों का अनुभव करके सौरभशाली जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा करता है– आवास वे मुख्य स्थान भी है जहां पर वर्तमान परिस्थितियों के अन्तर्गत बच्चों का सामाजीकरण, पति–पत्नी और नालेदारों में सुदृढ़ अन्तरंग सम्बन्ध घरितार्थ होते हैं। मकान वह उत्पलवन पट है जहाँ से परिवार के सदस्य विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक तथा जीवन के अन्य विस्तृत पक्षों में प्रवेश करते हैं (देलाई : 1980 : 76–77)।

ग्रामीण भारत के आवासीय दशाओं तथा उनमें सुधार की आवश्यकता के सन्दर्भ में कुछ विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। उन विद्वानों में मदन, पार्क तथा अरोड़ा के नाम उल्लेखनीय हैं। मदन के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय दशाओं को सुधारने के लिए खड़े पैमाने पर धन विनियुक्त की आवश्यकता है क्योंकि देश की अस्सी प्रतिशत जनता गाँव में रहती है इसलिए ग्रामीण समाज में आवासीय दशाओं की समस्या बृहद है (मदन : 1973 : 293)। पार्क का कहना है कि सम्पूर्ण देश के ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय दशाएं लगभग एकसी हैं। मकान प्रायः कच्चे हैं और बन्द है क्योंकि सुरक्षा की दृष्टि से उनमें खिड़किया इत्यादि नहीं रखी जाति इसलिए ये कम हवादार तथा कम प्रकाश वाले होते हैं (पार्क : 1971 : 37)।

अरोड़ा के अनुसार, – यद्यपि 80 प्रतिशत जनता गाँवों में रहती है किन्तु ग्रामीण आवास की और पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया। फलस्वरूप अन्य अर्द्ध–विकसित देशों के समान इस देश में भी ग्रामीण आवासीय दशाओं का ह्रास हुआ है। आवासीय दशाओं में होने वाले सामाजिक–आर्थिक तथा राजनैतिक उपलब्धियों का भली–भँति अधिमूल्यन नहीं किया गया। ग्रामीण आवासीय दशाओं में सुनियोजित सुधार ग्रामीण जीवन के आधुनिकीरण तथा ग्रामवासियों के शिक्षा, स्वास्थ्य तथा कार्यो के प्रति विचारों में परिवर्तन ला सकता है। यह लोगों को उत्पादन सम्बन्धी योजनाओं में सहयोग देने के लिए उद्‌बोधन का कार्य कर सकता है। (ए०सी० अरोड़ा : 1979 : 254)।

कई एक समाजशास्त्रियों ने अपने अध्ययनों में भारतीय ग्रामीण समाज की आवासीय दशाओं पर प्रकाश डाला है। इनमें विताई (1974), दूबे (1955), बेली (1958), एल०पी० विद्यार्थी तथा मिश्रा (1977) के नाम उल्लेखनीय हैं। इन विद्वानों के अध्ययनों में ग्रामीण आवास के सम्बन्ध में प्रमुख रूप से तीन निष्कर्ष देखने को मिलते है– प्रथम : ग्रामीण समाज में आवास प्रतिमान जातीय श्रृंखला पर आधारित होते हैं। प्रायः एक ही जाति के लोगों के मकान गाँव के एक ही भाग में विद्यमान होते है। प्रभुत्व जाति के मकान गाँव के केन्द्र में और अछूत जातियों के गाँव के बाहर प्रायः दक्षिण के एक कोने में देखने को मिलते है। द्वितीय पक्के तथा बड़े मकान अधिकांशतः उच्च जातियों एवं समृद्ध जमींदारों के ही होते हैं तथा जो व्यक्ति अधिया पर खेती अथवा कृषि मजदूरी करते हैं उनके मकान प्रायः कच्चे

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

तथा खपडैल इत्यादि के होते हैं तथा तृतीय अनुसूचित अथवा अछूत जातियों के मकान प्रायः कच्चे या झोपड़ी वाले होते हैं और इन लोगों के मकान की छतें प्रायः खपरेल अथवा फूस की देखने को मिलती है। यद्यपि उपरोक्त अध्यन भारतीय ग्रामीण समाज के आवासीय प्रतिमानों के जातीय भिन्नताओं के सन्दर्भ में विवेचन करते हैं किन्तु सामाजिक जीवन और स्वास्थ्य के सन्दर्भ में आवासीय दशाओं का यथेष्ट समाकलन नहीं करते। वे अध्ययन जो ग्रामीण सामाजिक जीवन तथा स्वास्थ्य के सन्दर्भ में आवासीय दशाओं का यथेष्ट समाकलन करते हैं उनमें हसन (1967) तथा लक्ष्मी राम (1977) के अध्ययन उपयोगी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Arora, A.C., Integrated Rural Develonment, S. Change & Co. Ltd. 1979.
2. Baily, F.G., Caste and the Econmic Fronties, oxford university press, Bombay, 1958.
3. Beteille, Andre, Studies in Agrotion Social Struoture, oxford Univerelty press, Delhi, 1974.
4. Carter, M.P., Home, School and work, London : Pergamon, 1963.
5. Davis, A., Motivation of Uader-Drevildged worker : Industry and Society, Macgraw Hill, New york, 1946.
6. Desal, A.R., Urban Family and Family planning in India, Popular Prakashan, Bombay, 1980.
7. Dube, S.C. India's Changing Villages, Routledge and kegan paul Ltd. London, 1960.
8. Hasan K.A., The cul Tural Frontiere of Health in Village India. Mankatalas, Bombay, 1967.
9. Hiraman, A.B., Social Change in Rural India A Study of two villages in Mabareetra, B.R. Publishing Corporation, Delhi, 1977.
10. Hcebel, F.A., man in the primltive world, MacGraw- Hill Book Co. Inc., Ne York,1958.
11. Hole, V., "Social Effects of planned Housing," The Town Planning Revlev, 25, No. 2, July 1959.
12. लक्ष्मीरामः "एक ग्रामीण समुदाय में स्वास्थ्य की दशाओं का समाज वैज्ञानिक अध्यन" पी–एच०डी०, शोध प्रबन्ध, समाजशास्त्र विभाग, बी०एच०यू० वाराणासी 1977.
13. Lewis, H, "Child Rearing Among Low Income Families" Presented to the washington centre for metropolition Studies, washington, D.C. June 8, 1961.
14. Marriot, Mackin, "Social Structure and Change in a u.p. village," in M.N. Srinivas (ed.) India's Villages, Asia Publishing House, Bombay, 1955.
15. Nijhawan, "Occupational Movillty and politcal Develoment," Economlc and politlcal weekly, Annual Number, January." 1971.
16. Park, J.E., Text Book of Preventive and Scial Medicine, A treatiae on communlty bealth, Benarast Das, puliahere, jabalpur, 1971.
17. Redfield, R., "The Social Organisation of Tradition," Far-Eastern ourterly, Vol, 15, 1955-56.
18. Seal, S.C., A Text Book of preventive and Social Medicine (ed). Allied Ageney, Calcutta, 1971.
19. Townsend, Peter, "Housing policy and poerty," in peter Townsend, The conoet of poverty, Heinmann, London, 1970.
20. U.N.O., Housing pollcy Guidelines for Develooing countries, New york (ST/ESS/50) : 1976.
21. Vidyarthi, L.P. and Mishra, No., Hari jan Todav, Classioal publications, New Delhi 1977.

*****